Dr. Vandana Suman
Associate professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

UG. Sem – II
MJC – 2 : Scientific Method

" Explanation : scientific and unscientific
(वैज्ञानिक तथा प्रचलित व्याख्या का भेद)

'Explanation' का शाब्दिक अर्थ होता है – " किसी अस्पष्ट, जटिल तथा रहस्यपूर्ण समस्या का स्पष्टीकरण करना। व्याख्या दो प्रकार की होती है।

(1) प्रचलित व्याख्या (Un-scietific Explanation) – जो व्याख्या लौकिक दैवी शक्तियों तथा सामाजिक प्रचलित बातों पर आधारित होती है उसे प्रचलित व्याख्या कहते हैं जैसे – चेचक होने के कारण अगर हम यह बतायें कि शीतला देवी के कुपित होने से होता है, या अतिवृष्टि होने का कारण अगर हम बतायें कि भगवान इन्द्र कुपित हो गये हैं तो ये प्रचलित व्याख्या मानी जायगी।

(2) वैज्ञानिक व्याख्या – जो व्याख्या तर्क, विचार, सामान्य तथा व्यापक नियमों पर आधारित होती है उसे वैज्ञानिक व्याख्या कहते हैं। जैसे – वृक्ष से फल गिरने का कारण अगर हम बतायें कि पृथ्वी में आकर्षण शक्ति होती है या मलेरिया ज्वर का कारण एनोफिलज मच्छड़ के काटने से होता है तो ये वैज्ञानिक व्याख्या कही जायगी।

प्रचलित व्याख्या और वैज्ञानिक व्याख्या में अनेक भेद है – (1) प्रचलित व्याख्या शक्तियों के नाम की

Sunday 03
MARCH 2013

जाती है। जैसे - चेचक रोग की प्रचलित व्याख्या यह है कि यह शीतला देवी के नाराज होने से होता है। शीतला देवी अप्राकृतिक शक्ति है। वैज्ञानिक व्याख्या प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा की जाती है। जैसे - चेचक एक प्रकार के कीटाणुओं से होता है कीटाणु प्राकृतिक तत्व है।

अप्राकृतिक शक्तियाँ होती हैं या नहीं यह नहीं कहा जा सकता है। प्राकृतिक शक्तियाँ अवश्य होती हैं। इसलिए प्रचलित व्याख्या में संदेहप्रद शक्तियों या तत्वों का समावेश रहता है। वैज्ञानिक व्याख्या में संदेहरहित शक्तियों या तत्वों की चर्चा होती है।

2. प्रचलित व्याख्या संवेग और भाव पर आश्रित होती है। सुख और दुःख की चेतना अनुभूति को भाव कहते हैं। प्रेम, भय और क्रोध की अनुभूति को संवेग कहते हैं। प्रचलित व्याख्या में इन सब तत्वों का हाथ रहता है। जैसे - धार्मिक व्यक्ति को भगवान के विचार में सुख का अनुभव होता है।

इसलिए जब कोई घटना इनके साथ घटती है तो वह भगवान की दया या मर्जी के कारण बतलाकर इसकी व्याख्या करता है।

JANUARY 2013

WK	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1		1	2	3	4	5	6
	7	8	9	10	11	12	13
	14	15	16	17	18	19	20
	21	22	23	24	25	26	27
5	28	29	30	31	-	-	-

वैज्ञानिक व्याख्या

आदि और विचार पर आधारित होता है। वैज्ञानिक अपने विचार या तर्क के द्वारा किसी घटना की व्याख्या करता है जैसे- अच्छी फसल होने पर किसान भगवान को दुहाई देता है किन्तु एक वैज्ञानिक खाद, पानी, बीज आदि को इसका कारण मानता है।

3. प्रचलित व्याख्या घटना विशेषों की होती है। जैसे- महामाया बाबु ने क्यों जन क्रांति दल का निर्माण किया, मेरा दोस्त आज क्यों नहीं आया इत्यादि घटनाओं की व्याख्या व्यक्ति विशेष काल तथा स्थान तक ही सीमित रहती है।

वैज्ञानिक व्याख्या सामान्य तथा व्यापक नियमों के आधार पर की जाती है। जैसे - वृक्ष से फल क्यों गिरता है, चन्द्र ग्रहण क्यों लगता है इत्यादि घटनाओं की व्याख्या सर्व देश - काल व्यापी होता है।

4. प्रचलित व्याख्या से साधारण लोगों को सन्तोष मिलती है। जैसे - वर्षा होने का कारण अगर कोई बताये कि आकाश में भोला हाथी रहता है जो अपनी सूँढ़ से पानी बरसाता है तो इससे वर्षा होने का वास्तविक कारण स्पष्ट नहीं होता है। इस तरह की व्याख्या से अनपढ़ और गँवार लोग ही सन्तुष्ट हो सकते हैं। वैज्ञानिक व्याख्या से

MARCH 2013

WK	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
9					1	2	3
10	4	5	6	7	8	9	10
11	11	12	13	14	15	16	17
12	18	19	20	21	22	23	24
13	25	26	27	28	29	30	31

ज्ञानियों की कल्पना आधारित है। जैसे - वर्षा होने का कारण इन्द्र का आसमान से जल की बौछार करना तथा मानसून हवाओं को जानना चाहेंगे तो यह ज्ञानियों का मान्य होगा। क्योंकि इस व्याख्या से वर्षा का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

5. प्रचलित व्याख्या बाह्य समानता तथा गौण लक्षणों पर आधारित होती है। जैसे - वृक्ष से गिरते हुए सेब को देखकर साधारण व्यक्ति कहते हैं कि आम, अमरूद, अनार इत्यादि सभी फल वृक्ष से गिरते हैं।

वैज्ञानिक व्याख्या आन्तरिक तथा वास्तविक लक्षणों पर आधारित होती है। जैसे वृक्ष से फल के नीचे गिरने की वैज्ञानिक व्याख्या यह है कि पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। जिसके कारण ऊपर की सभी चीजें जमीन पर गिर पड़ती हैं।

6. प्रचलित व्याख्या में घटना की जाँच नहीं की जाती है, जैसे - भूकम्प की व्याख्या के लिए अगर यह कहा जाय कि पृथ्वी शेषनाग के पीठ पर आश्रित है और जब शेषनाग करवटें बदलते हैं तब-तब भूकम्प होता है। इस व्याख्या में इस बात की जाँच नहीं

है पाती है कि वास्तव में शेषनाग की पीठ पर पृथ्वी आश्रित है या नहीं।

वैज्ञानिक व्याख्या में पहले घटना की काफी छानबीन की जाती है और तब निष्कर्ष निकाला जाता है जैसे — गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त, विकासवादी सिद्धान्त, मेन्डलस नियम इत्यादि इसके ज्वलन्त उदाहरण है।

इस तरह प्रचलित व्याख्या और वैज्ञानिक व्याख्या में यही सब अन्तर है।

व्याख्या की सीमा— संसार में जितनी भी वस्तुएँ है सबकी व्याख्या सम्भव नहीं है और कुछ ऐसे तथ्य होते हैं जो इतने सरल होते है कि इनकी व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं है। अतः व्याख्या की कुछ अपनी सीमा है—

(a) व्याख्या करने का अर्थ जटिल एवं अस्पष्ट वस्तु को स्पष्ट एवं सरल बनाना। परन्तु जो स्वयं सूक्ष्म तथा सरल तथ्य होता है उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है

(b) पदार्थ के प्राथमिक गुणों की व्याख्या नहीं हो सकती है ये अपनी किस्म के अकेले और स्वतन्त्र होते है। इसलिये इनकी समानता अन्य किसी भी चीज से नहीं की जा सकती है और फलस्वरूप व्याख्या भी नहीं हो सकती है, विस्तार, आकृति, ठोसपन की

MARCH 2013

WK	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
9					1	2	3
10	4	5	6	7	8	9	10
11	11	12	13	14	15	16	17
12	18	19	20	21	22	23	24
13	25	26	27	28	29	30	31

व्याख्या सम्भव नहीं है।

(c) जो मूल सिद्धान्त होते हैं उनकी व्याख्या सम्भव नहीं है। मूल सिद्धान्त अत्यन्त ही मौलिक होते हैं इनके ऊपर तो कोई नियम होता है और न कोई सिद्धान्त हो। अतः इन मूल सिद्धान्तों जैसे प्रकृति समरूपता नियम विचार के नियम आदि की व्याख्या हो ही नहीं सकती।

(d) किसी खास वस्तु की व्याख्या किसी नियम से नहीं हो सकती। किसी खास वस्तु का वर्णन किया जा सकता है परन्तु उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। एक कुर्सी का वर्णन हम कर सकते हैं, परन्तु व्याख्या नहीं कर सकते।

(e) यदि किसी वस्तु के कारण का पता नहीं है तो उसकी व्याख्या नहीं हो सकती है। यदि किसी वस्तु के कारण का पता नहीं है तो उसकी व्याख्या नहीं हो सकती है। विश्व का कारण नहीं जानते यदि ब्रह्माण्ड की व्याख्या भी हम नहीं कर सकते हैं।